



# हर साल 80 लाख की जान लेती है तंबाकू

लखनऊ (ब्यूरो)। एरा यूनिवर्सिटी के श्वसन चिकित्सा विभाग के प्रोफेसर और केजीएमयू के पल्मोनरी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर धूम्रपान और तंबाकू से होने वाले नुकसान के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि तंबाकू हर साल 80 लाख से अधिक लोगों की जान लेता है। इनमें से 67 लाख से अधिक मौतें सीधे तंबाकू के उपयोग का परिणाम हैं जबकि लगभग 13 लाख धूम्रपान करने वालों के धुएं के संपर्क में आने (पैसिव स्मोकिंग) का परिणाम हैं।

उन्होंने बताया कि ग्लोबल एडल्ट तंबाकू सर्वे (2016-2017 के अनुसार पुरुषों में तंबाकू का औसत उपयोग 42.4 प्रतिशत और महिलाओं में 14.2 प्रतिशत है। ग्लोबल युथ तंबाकू सर्वे के अनुसार 14.6 प्रतिशत, छत्र (19

🔴 एरा यूनिवर्सिटी के श्वसन चिकित्सा विभाग के प्रोफेसर प्रो. राजेंद्र प्रसाद ने दी जानकारी

प्रतिशत लड़के और 8.3 प्रतिशत लड़कियां) वर्तमान में किसी न किसी रूप में तंबाकू का उपयोग करते हैं। 4.4 प्रतिशत वर्तमान में सिगरेट पीते हैं। 14.6 प्रतिशत वर्तमान में तंबाकू के किसी अन्य रूप का उपयोग करते हैं। 5.7 प्रतिशत आमतौर पर घर पर धूम्रपान करते हैं, 47. प्रतिशत दुकान से सिगरेट खरीदते हैं और 56.2 प्रतिशत जिन्होंने दुकान से सिगरेट खरीदी उन्हें उनकी उम्र के कारण खरीदने से मना नहीं किया गया।

एनएफएचएस-5 रिपोर्ट (2019-2021) के अनुसार 15



वर्ष और उससे अधिक आयु के 38 प्रतिशत पुरुष और 9 प्रतिशत महिलाएं वर्तमान में किसी न किसी तंबाकू उत्पाद का उपयोग करते हैं। तंबाकू का सेवन न केवल सांस संबंधी बीमारियों जैसे फेफड़ों के कैंसर सीओपीडी टीबी और निमोनिया के लिए एक ज्ञात जोखिम कारक है बल्कि यह हृदय संबंधी बीमारियों स्ट्रोक ऑरोफरीन्जियल कैंसर ओसोफेगल कैंसर मोतियाबिंद और कई अन्य के बिकार के साथ भी जुड़ा हुआ है। विडंबना यह है कि

अधिकांश धूम्रपान करने वाले प्रतिकूल प्रभावों को जानते हुए या धूम्रपान से संबंधित बीमारियों से पीड़ित होने के बावजूद निकोटीन की लत के कारण इसे छोड़ नहीं पाते हैं।

प्रोफेसर राजेंद्र प्रसाद ने आगे जोर दिया कि भारत में इस्तेमाल किए जाने वाले तंबाकू के सभी रूपों में से बीड़ी धूम्रपान का सबसे आम रूप है। बीड़ी धूम्रपान सिगरेट पीने जितना ही खतरनाक और उससे भी बदतर है। इस वर्ष का थीम 'प्रोटेक्टिंग चिल्ड्रन फ्रॉम टबैको इंडस्ट्री इंटरफेरेंस' सही है क्योंकि 10 में से 9 धूम्रपान करने वालों ने 18 वर्ष की आयु से पहले अपनी पहली सिगरेट पी है। जब तक वे इसके दुष्प्रभावों को समझते हैं या महसूस करते हैं तब तक वे पहले से ही व्यसनी बन चुके होते हैं और अपने जीवन के बाकी समय में इसे छोड़ने में असमर्थ होते हैं। धूम्रपान शुरू करने के कारणों में केवल

साथियों का दबाव या बस इसे आजमाना या निकोटीन के प्रभाव से नशे में होना शामिल है। इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट जिसे सिगरेट धूम्रपान बंद करने में सहायता के लिए उपकरण के रूप में प्रचारित किया जाता है वह भारत में कानून द्वारा प्रतिबंधित है। इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट ने धूम्रपान और निकोटीन की लत को और बढ़ा दिया है। यूरोपीय क्षेत्र में 12.5 किशोर इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट का सेवन कर रहे हैं और यही बात अमेरिका में मिडिल और हाई स्कूल के बच्चों के लिए भी सच है। इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट (वेपिंग निकोटीन को सांस द्वारा लेने का एक तरीका है, जो निकोटीन की लत को ओर ले जाता है जो अंततः सिगरेट धूम्रपान में परिणत होता है जो अधिक आसानी से उपलब्ध और सस्ता है। दुर्भाग्य से युवाओं की शाम की पार्टियों में वेपिंग जीवन का एक तरीका बन गया है।